कक्षा - 10

समकालीन भारत - 2

अध्याय - 1

संसाधन एवं विकास

भाग - 5

पंकज वैष्णव

संसाधन एवं विकास



Q. निम्न में से भारत के किन राज्यों में खनिज और कोयले के प्रचुर भंडार है ?

(a) झारखंड
(b) मध्यप्रदेश
(c) छत्तीसगढ़
(d) उपरोक्त सभी

संसाधन एवं विकास

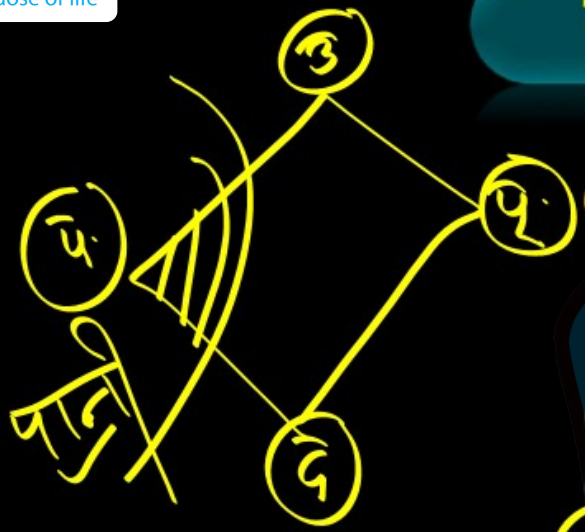

Q. राजस्थान के पश्चिमी भाग में मुख्य रूप से किस संसाधन की कमी है ?

(a) सौर ऊर्जा
(b) पवन ऊर्जा
(c) जल संसाधन
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

संसाधन एवं विकास

Q. ऐसा आर्थिक विकास, जो पर्यावरण को बिना नुकसान पहुँचाए हो और भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकता की अवहेलना न कर, क्या कहलाता है ?

(a) विनाशकारी विकास
(b) सतत पोषणीय विकास
(c) नकारात्मक विकास
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

संसाधन एवं विकास

Q. शुमेसर की पुस्तक "स्माल इज ब्यूटीफुल" में किनके विचारो की पुनरावृति की गयी ?

(a) अब्दुल कलाम
(b) महात्मा गाँधी
(c) भगत सिंह
(d) वल्लभ भाई पटेल

संसाधन एवं विकास



Q. "ब्रुन्ड्टलैंड आयोग" द्वारा जारी की गयी रिपोर्ट को बाद में किस पुस्तक के रुप में प्रकाशित किया गया ?

(a) हमारी अलग दुनिया
(b) हमारी एक दुनिया
(c) हमारा साँझा भविष्य
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

ipca
A dose of life

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

संसाधन एवं विकास

संसाधनों का संरक्षण

संसाधन किसी भी तरह के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

परंतु, संसाधनों का विवेकहीन उपभोग और अति उपयोग के कारण कई सामाजिक-आर्थिक और पर्यावरणीय समस्याएँ पैदा हो सकती हैं।

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

संसाधन एवं विकास



इन समस्याओं से बचाव के लिए विभिन्न स्तरों पर संसाधनों का संरक्षण आवश्यक है।

भूतकाल से ही संसाधनों का संरक्षण बहुत से नेताओं और चिंतकों के लिए चिंता का विषय रहा है।

जैसे:- गांधी जी ने संसाधनों के संरक्षण पर अपनी चिंता इन शब्दों में व्यक्त की है – "हमारे पास हर व्यक्ति की आवश्यकता पूर्ति के लिए बहुत कुछ है, लेकिन किसी के लालच की संतुष्टि के लिए नहीं ।" अर्थात् हमारे पास पेट भरने के लिए बहुत है लेकिन पेटी भरने के लिए नहीं ।

संसाधन एवं विकास



उनके अनुसार विश्व स्तर पर संसाधन ह्रास के लिए लालची और स्वार्थी व्यक्ति तथा आधुनिक प्रौद्योगिकी की शोषणात्मक प्रवृत्ति जिम्मेदार है।

वे अत्यधिक उत्पादन के विरुद्ध थे और इसके स्थान पर अधिक बड़े जनसमुदाय द्वारा उत्पादन के पक्षधर थे।

संसाधन एवं विकास

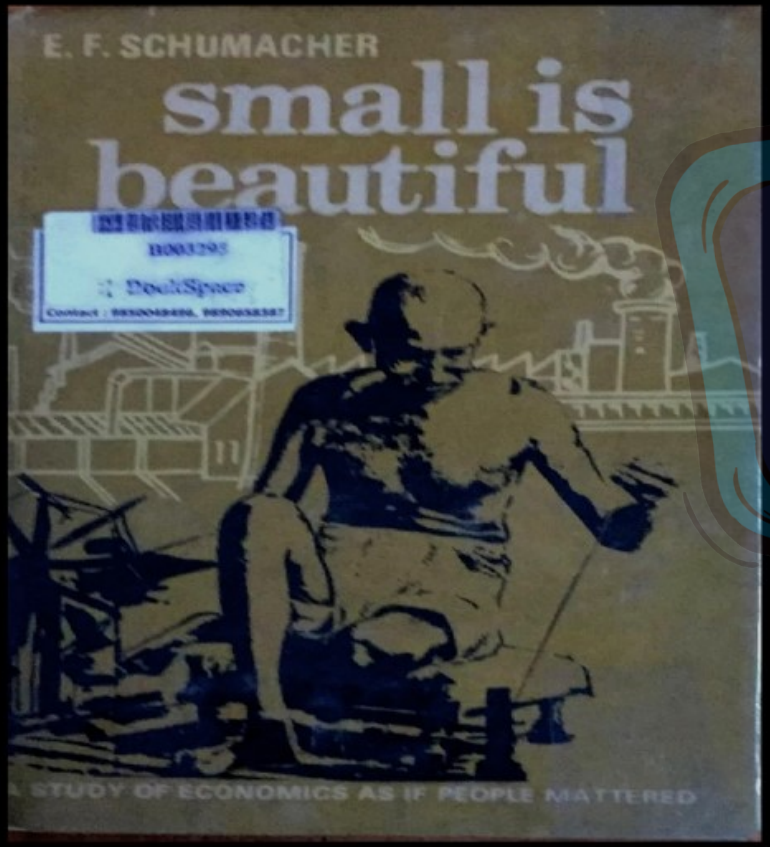

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यवस्थित तरीके से संसाधन-संरक्षण की वकालत 1968 में "क्लब ऑफ रोम" ने की।

तत्पश्चात् 1974 में शुमेसर ने अपनी पुस्तक "स्माल इज ब्यूटीफुल" में इस विषय पर गांधी जी के दर्शन की एक बार फिर से पुनरावृत्ति की है।

1987 में "ब्रुन्ड्टलैंड आयोग" रिपोर्ट द्वारा वैश्विक स्तर पर संसाधन संरक्षण में मूलाधार योगदान किया गया।

ipca
A dose of life

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

संसाधन एवं विकास



इस रिपोर्ट ने "सतत् पोषणीय विकास" (Sustainable Development) की संकल्पना प्रस्तुत की और संसाधन-संरक्षण की वकालत की।

यह रिपोर्ट बाद में "हमारा सांझा भविष्य" (Our Common Future) शीर्षक से पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुई।



इस संदर्भ में एक और महत्त्वपूर्ण योगदान रियो डी जेनेरो, ब्राजील में 1992 में आयोजित पृथ्वी सम्मेलन द्वारा किया गया।

संसाधन एवं विकास

भू-संसाधन



हम भूमि पर रहते हैं, इसी पर अनेकों आर्थिक क्रियाकलाप करते हैं और विभिन्न रुपों में इसका उपयोग करते हैं।
अतः भूमि एक बहुत महत्त्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है।

प्राकृतिक वनस्पति, वन्य जीवन, मानव जीवन, आर्थिक क्रियाएँ, परिवहन तथा संचार व्यवस्थाएँ भूमि पर ही आधारित हैं।

परंतु भूमि एक सीमित संसाधन है, इसलिए उपलब्ध भूमि का विभिन्न उद्देश्यों के लिए उपयोग सावधानी और योजनाबद्ध तरीके से होना चाहिए ।

संसाधन एवं विकास





- भारत में भूमि पर विभिन्न प्रकार की भू-आकृतियाँ जैसे पर्वत, पठार, मैदान और द्वीप पाए जाते हैं।
- लगभग 43 प्रतिशत भू-क्षेत्र मैदान हैं जो कृषि और उद्योग के विकास के लिए सुविधाजनक हैं।
- पर्वत पूरे भू-क्षेत्र के 30 प्रतिशत भाग पर विस्तृत हैं। वे कुछ बारहमासी नदियों के प्रवाह को सुनिश्चित करते है, पर्यटन विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान करता है और पारिस्थितिकी के लिए महत्त्वपूर्ण है।

ipca
A dose of life

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

संसाधन एवं विकास



- देश के क्षेत्रफल का लगभग 27 प्रतिशत हिस्सा पठारी क्षेत्र है। इस क्षेत्र में खनिजों, जीवाश्म ईंधन और वनों का अपार संचय कोष है।

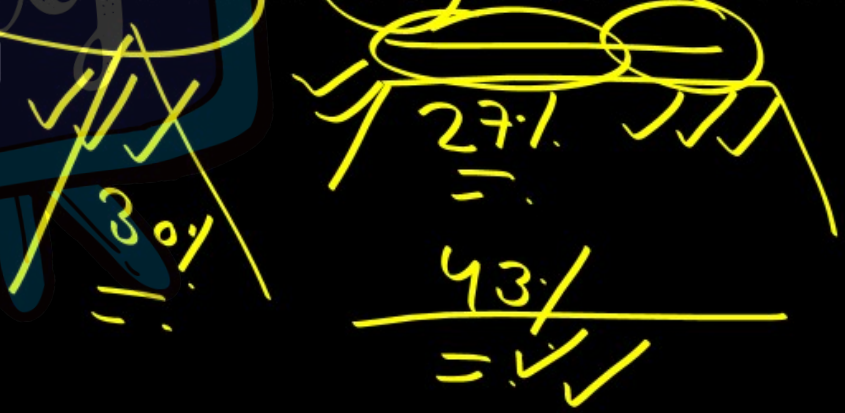

संसाधन एवं विकास

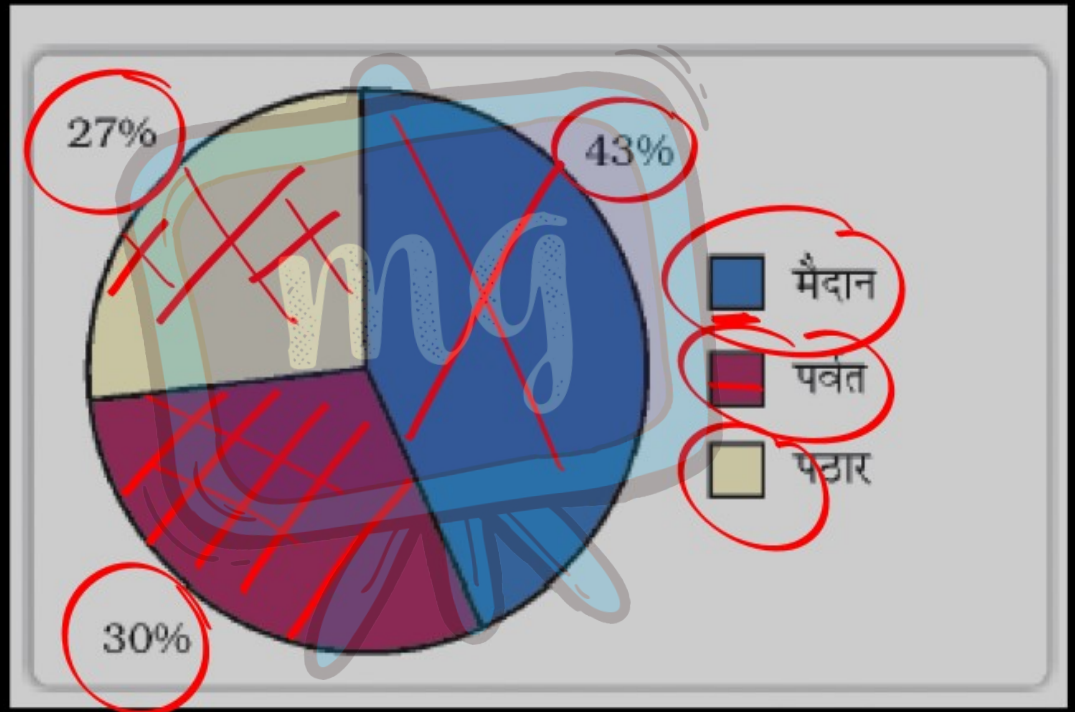

मुख्य भू-आकृतियों के अंतर्गत क्षेत्र

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

संसाधन एवं विकास

भू-उपयोग



भू-संसाधनों का उपयोग निम्नलिखित उद्देश्यों से किया जाता है:-

1. वन
2. कृषि के लिए अनुपलब्ध भूमि
   (अ) बंजर तथा कृषि अयोग्य भूमि
   (ब) गैर-कृषि प्रयोजनों में लगाई गई भूमि
   जैसे इमारतें, सड़क, उद्योग इत्यादि ।
3. अन्य कृषि अयोग्य भूमि
   (अ) स्थायी चरागाह

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

संसाधन एवं विकास

(ब) विविध वृक्षों तथा उपवनों के अधीन भूमि

(स) कृषि योग्य बंजर भूमि जहाँ 5 से अधिक वर्षों से खेती न की गई हो ।

4. परती भूमि

(अ) वर्तमान परती

(जहाँ 1 या उससे कम समय से खेती न की गई हो)

(ब) वर्तमान परती भूमि के अतिरिक्त अन्य परती भूमि या पुरातन परती (जहाँ 1 से 5 वर्ष से खेती न की गई हो)

ipca
A dose of life

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

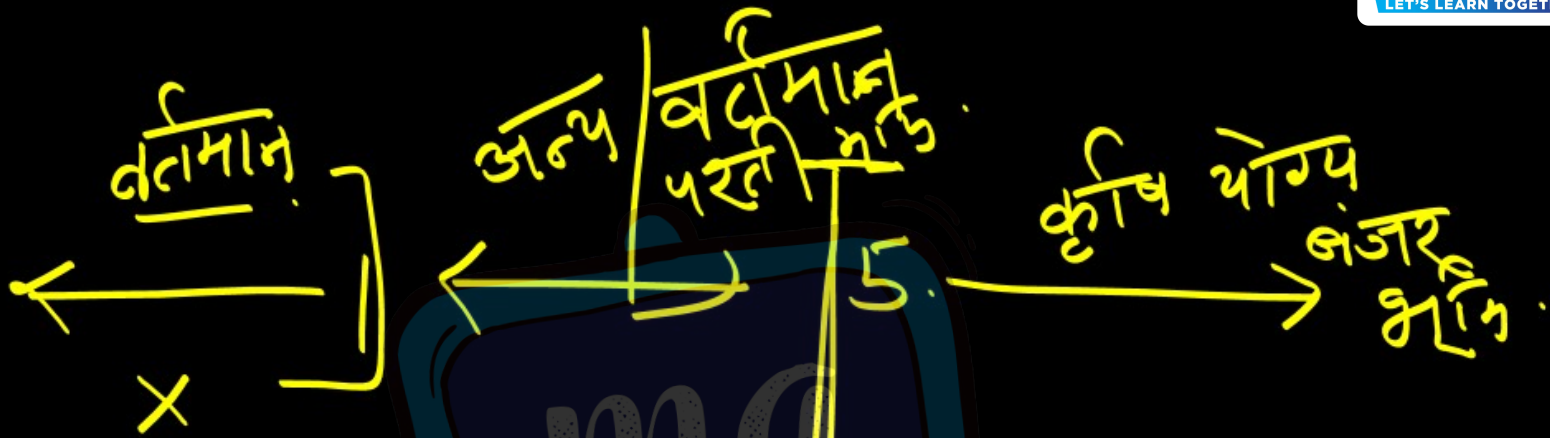

संसाधन एवं विकास

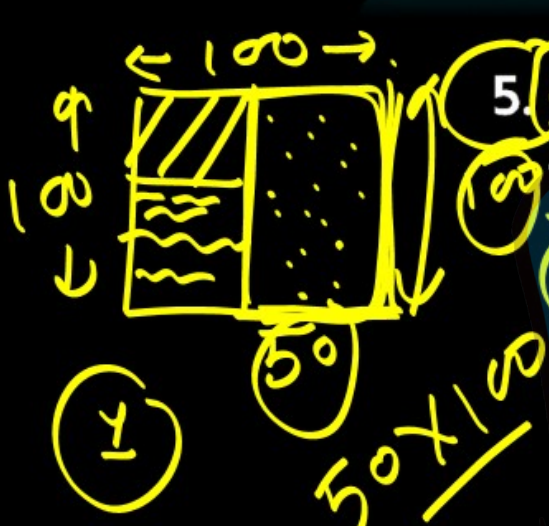

5. शुद्ध बोया गया क्षेत्र

वह भूमि, जिस पर फसलें उगाई व काटी जाती हैं, वह शुद्ध (निवल) बोया गया क्षेत्र कहलाता है।

एक कृषि-वर्ष में एक बार से अधिक बोए गए क्षेत्र को शुद्ध (निवल) बोए गए क्षेत्र में जोड़ दिया जाए तो वह सकल कृषित क्षेत्र कहलाता है।

संसाधन एवं विकास

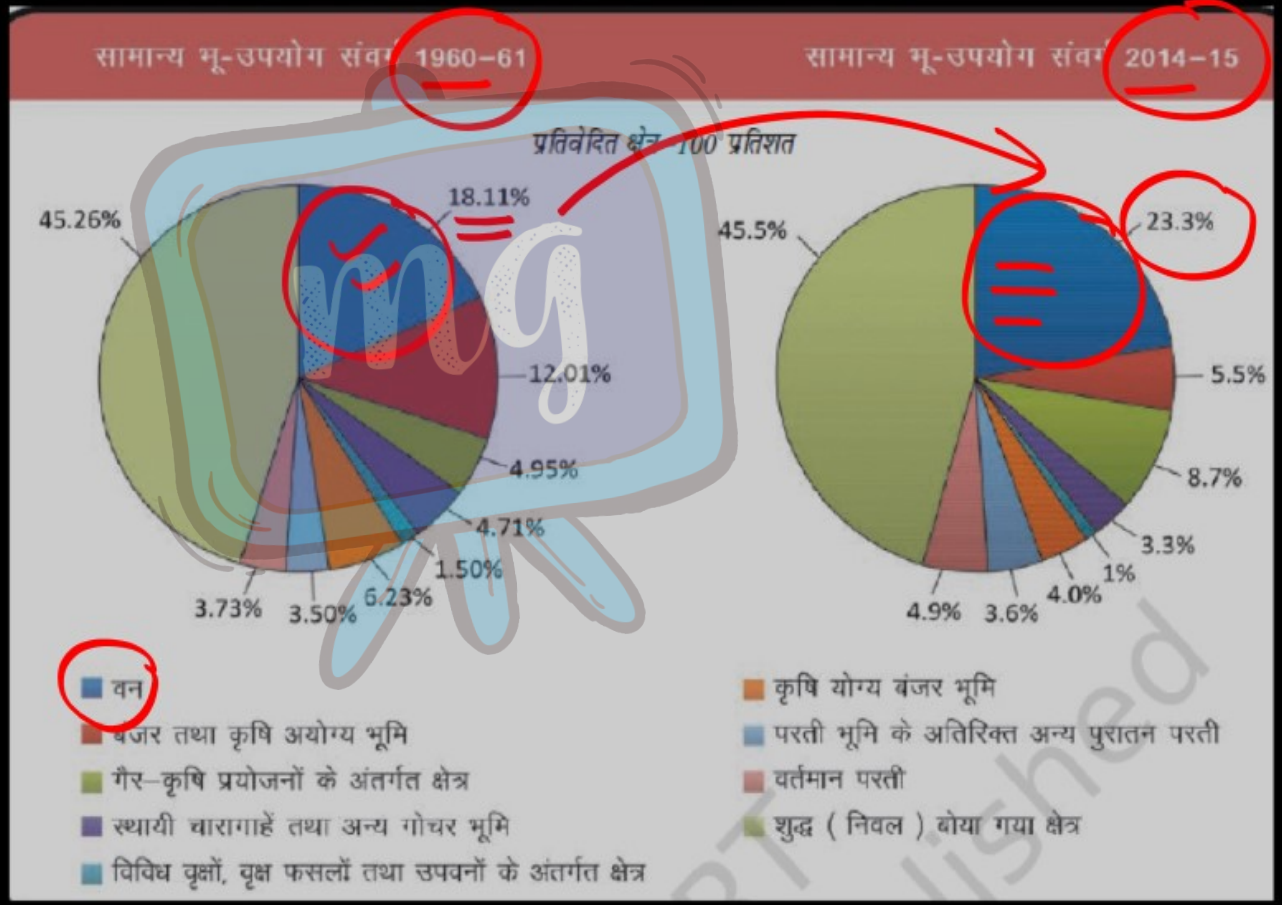
सामान्य भू-उपयोग संवर्ग 1960–61
सामान्य भू-उपयोग संवर्ग 2014–15
प्रतिवेदित क्षेत्र 100 प्रतिशत
45.26%
18.11%
12.01%
4.95%
4.71%
1.50%
6.23%
3.50%
3.73%
45.5%
23.3%
5.5%
8.7%
3.3%
1%
4.0%
3.6%
4.9%
वन
बंजर तथा कृषि अयोग्य भूमि
गैर–कृषि प्रयोजनों के अंतर्गत क्षेत्र
स्थायी चारागाहें तथा अन्य गोचर भूमि
विविध वृक्षों, वृक्ष फसलों तथा उपवनों के अंतर्गत क्षेत्र
कृषि योग्य बंजर भूमि
परती भूमि के अतिरिक्त अन्य पुरातन परती
वर्तमान परती
शुद्ध (निवल) बोया गया क्षेत्र

ipca
A dose of life

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

संसाधन एवं विकास

भारत में भू-उपयोग प्रारूप

भू-उपयोग को निर्धारित करने वाले तत्त्व :-

- भौतिक कारक (भू-आकृति, जलवायु, मृदा का प्रकार)
- मानवीय कारक (जनसंख्या घनत्व, प्रौद्योगिक क्षमता, संस्कृति)

भारत का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल = 32.8 लाख वर्ग किमी.

परंतु इसके 93% भाग के ही भू-उपयोग आँकड़े उपलब्ध हैं
क्योंकि पूर्वोत्तर प्रांतों में असम को छोड़कर अन्य प्रांतों के सूचित क्षेत्र के बारे में जानकारी उपलब्ध नहीं है।
इसके अलावा जम्मू और कश्मीर में पाकिस्तान और चीन अधिकृत क्षेत्रों के भूमि उपयोग का सर्वेक्षण भी नहीं हुआ है।

ipca
A dose of life

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

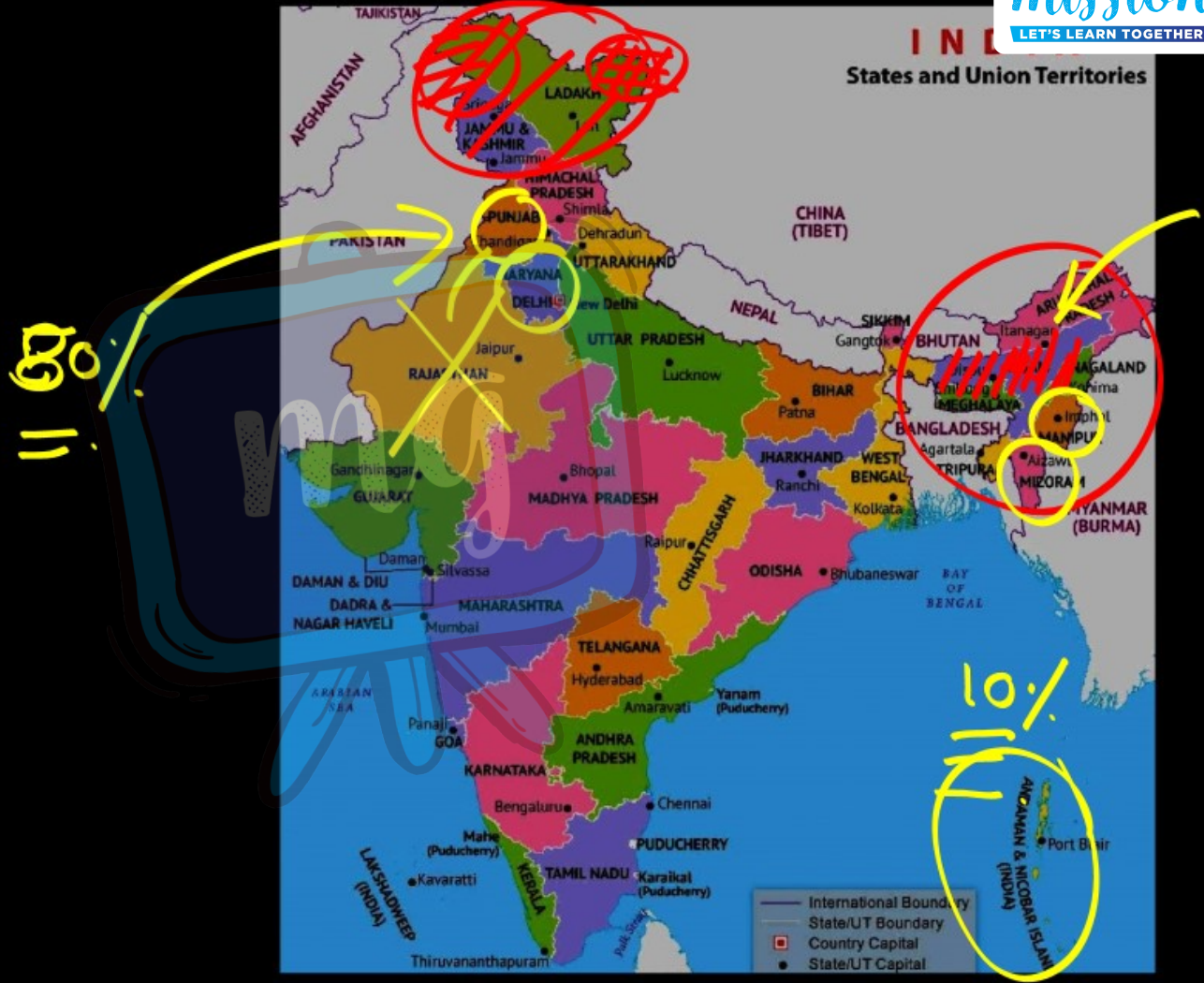

संसाधन एवं विकास



भारत के कुल सूचित क्षेत्र के लगभग 54% हिस्से पर ही खेती हो सकती है।

पंजाब और हरियाणा में 80% भूमि पर खेती होती है,

परंतु अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, मणिपुर और अंडमान निकोबार द्वीप समूह में 10% से भी कम क्षेत्र बोया जाता है।